

समाचार वाणी

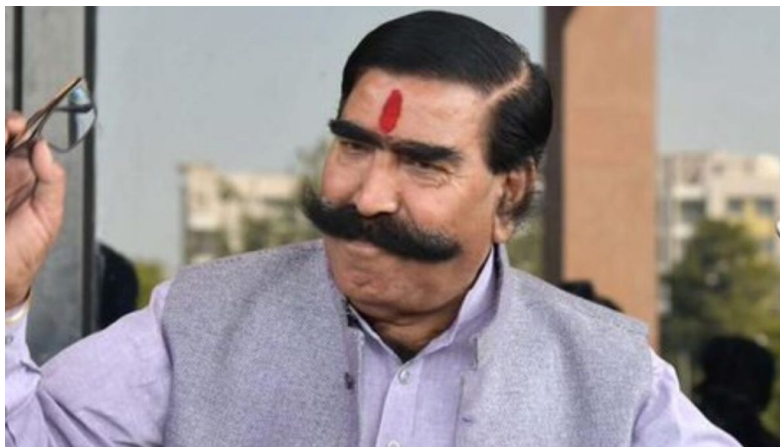
खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

धौलपुर दौरे पर ज्ञानदेव आहूजा का विवादित बयान : 'मैं बीजेपी का था, हूं और रहूंगा'

Publisher

Published on 08 Oct 2025



राजस्थान के धौलपुर में बीजेपी के पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा का हालिया दौरा राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया है। आहूजा ने दौरे के दौरान एक विवादित बयान दिया जिसमें उन्होंने मुख्यमंत्री और बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष को “नौसिखिया” बताया और कहा कि वे बीजेपी में थे, हैं और रहेंगे। उनका कहना था कि नौसिखिया लोग उन्हें पार्टी से निकालने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि उन्होंने संगठन और संघ के लिए अपना खून-पसीना बहाया है।

ज्ञानदेव आहूजा ने कहा कि पार्टी में उनके योगदान को नजरअंदाज करना सही नहीं होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी लंबी राजनीतिक यात्रा और अनुभव पार्टी के लिए महत्वपूर्ण हैं और उन्हें इस अनुभव के आधार पर सम्मान दिया जाना चाहिए। उनका यह बयान धौलपुर के राजनीतिक माहौल में हलचल पैदा कर गया है।

सियासी विश्लेषकों का कहना है कि आहूजा का यह बयान इस समय पार्टी के भीतर चल रहे समीकरणों को प्रभावित कर सकता है। उन्होंने मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष को नौसिखिया बताकर स्पष्ट किया कि उन्हें पार्टी में अपनी जगह बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार की बाधा स्वीकार नहीं है।

पूर्व विधायक ने अपने बयान में यह भी कहा कि बीजेपी में उनके अनुभव और संगठन के लिए योगदान को कोई हल्के में नहीं ले सकता। उन्होंने पार्टी के भीतर चल रहे संघर्षों और नए नेताओं की तेजी को चुनौती देते हुए कहा कि उनका अनुभव और निष्ठा पार्टी के लिए अनमोल है।

धौलपुर दौरे के दौरान आहूजा ने कहा कि पार्टी की मजबूती के लिए पुराने और अनुभवी नेताओं का होना जरूरी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी में नौसिखिया नेताओं का होना स्वागत योग्य है, लेकिन इसे पुराने और अनुभवी नेताओं की छवि पर असर डालने के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

विशेषज्ञों का मानना है कि आहूजा का बयान बीजेपी के भीतर चल रहे कांग्रेस विरोधी रणनीति और नेतृत्व के विवाद को उजागर

करता है। उन्होंने यह संकेत दिया कि पार्टी के भीतर शक्ति और अनुभव के आधार पर विवाद जारी रहेगा।

आहूजा ने मीडिया से बातचीत में कहा कि उन्होंने हमेशा पार्टी और संगठन के लिए काम किया है। उनका कहना था कि उनका योगदान केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि संगठन और संघ के हित में रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पार्टी में उनका सम्मान बनाए रखना आवश्यक है।

धौलपुर दौरे के दौरान आहूजा का यह बयान स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच चर्चा का विषय बन गया। कई कार्यकर्ताओं ने उनका समर्थन किया, जबकि कुछ ने कहा कि यह बयान पार्टी के भीतर अस्थिरता पैदा कर सकता है। राजनीतिक विश्लेषक इसे पार्टी के भीतर नेतृत्व और अनुभव को लेकर चल रहे मतभेदों के संकेत के रूप में देख रहे हैं।

पूर्व विधायक ने कहा कि पार्टी में उनके योगदान और अनुभव की अनदेखी नहीं की जा सकती। उन्होंने स्पष्ट किया कि नौसिखिया नेताओं की तेजी और नई नीतियां स्वागत योग्य हैं, लेकिन यह पुराने और अनुभवी नेताओं की छवि को नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

विशेषज्ञों का मानना है कि आहूजा का बयान केवल व्यक्तिगत नाराजगी का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह पार्टी के भीतर **नेतृत्व और संगठन संरचना** पर उठ रहे सवाल को उजागर करता है। यह संकेत देता है कि राजनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए पार्टी को अनुभवी नेताओं और नए नेताओं के बीच तालमेल बैठाना होगा।

धौलपुर दौरे के दौरान आहूजा ने कहा कि वे पार्टी में अपनी जगह बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में संगठन और पार्टी के लिए कई कठिन फैसले लिए हैं और भविष्य में भी पार्टी के हित में काम करते रहेंगे।

कुल मिलाकर, धौलपुर दौरे पर ज्ञानदेव आहूजा का बयान बीजेपी के भीतर **अनुभव, नेतृत्व और संगठन संरचना** को लेकर चल रहे विवादों को उजागर करता है। उनका यह बयान पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण संकेत है कि पुराने और अनुभवी नेताओं का सम्मान बनाए रखना संगठन की मजबूती के लिए आवश्यक है।

भविष्य में बीजेपी के भीतर इस बयान के असर और उसके राजनीतिक परिणामों पर नजर रखना महत्वपूर्ण होगा। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि आहूजा का यह बयान पार्टी के भीतर नेतृत्व, अनुभव और युवा नेताओं के बीच संतुलन बनाने की चुनौती को और स्पष्ट करता है।